

SHRI ANWAR AHMAD ALIAS ANWAR JALALPURI (POSTHUMOUS)

Shri Anwar Ahmad alias Anwar Jalalpuri was a true genius of various languages. He was lecturer in English by profession, poet of Urdu by heart and connoisseur of Hindi language.

2. He was born on July 6, 1947 in Jalalpur, Ambedkar Nagar District of Uttar Pradesh. Since childhood, he had a keen interest in poetry & prose which gave him a spirit of literature. Late Shri Jalalpuri received his Master of Arts degree in English from the prestigious Aligarh Muslim Univesity, Aligarh, Master of Arts degree in Urdu from Awadh University, Faizabad and Adeeb Kamil from Jamiya Urdu, Aligarh. He was lecturer of English literature, N.D. College Jalalpur, Ambedkar Nagar. He established a college named after Mirza Ghalib in Jalalpur. Lucknow is honoured to be the host city of his intellectualism. Anwar Jalalpuri is also world famous for his 'Nizamat' which is always appealing to the people who love & admire poetry. He achieved many milestones in establishing himself as the one of the legend of Urdu literature.

3. Shri Jalalpuri was Founder/Chairman and Manager of Mirza Ghalib Inter College, Jalalpur, Ambedkar Nagar. He was member/advisor of the editorial boards various literary magazines and founder of Adabi Tanzim "bazm-e Danish Jalalpur". He was also patron of Help U Educational and Charitable Trust, Lucknow.

4. Shri Jalalpuri has translated all 700 Shlokas of the Bhagvad Geeta into Urdu poetry. Driven by an urge to promote communal & ethnic harmony, and national integration, this initiative is really outstanding. He is of the opinion that "Geeta, Upanishads and Quran are nothing less than 'human heritage' and they must be preserved at all cost, there is an urgent need to spread the message contained in Geeta among the human beings, irrespective of their religion".

5. Shri Jalalpuri is also credited in translating 30th para of Quran as well as Geetanjali of Tagore into Urdu poetry and also translated famous persian poet Omer Khaiyyam Rubaiyat into Urdu poetry.

6. Shri Jalalpuri participated and conducted mushaira and kavi sammelans at national and international level during last 40 years of his life. He was writer and composer of about 24 books in Urdu and Devanagari script including Urdu Shayari Mein Geeta, Roshani Ke Safeer, Khare Paniyo Ka Silsila, Khushbu Ki Rishtedari, Jaagti Aankhein are some of his collection of Urdu-Hindi poetry. He was also credited with four books on 'Natiya Shairi'. 'Apni Dharti Apne Log' is compilation of his work on prose. Many biographies are also credited to his intellectualism. He was also a regular contributor in many leading newspapers & magazines. Dialougues and songs of the serial 'Akbar The Great' on television were penned by him. Shri Jalalpuri can also be seen in the movie 'Dedh lshqia', in spite of being the Chairman of the Uttar Pradesh Madarsa Education Board and member of Uttar Pradesh Haj Committee, Uttar Pradesh Urdu Academy, Khwaja Moinuddin Chishti Urdu-Arabic-Persian University Executive Committee.

7. Shri Jalalpuri was recipient of several awards which include U.P. highest civilian award Yash Bharti 2015-2016, Uttar Pradesh Gaurav Sam man 2012, Firaaq Samman 2012, Maati Ratna Samman, Uttar Pradesh 2011, Award by U.P. State Urdu Academy for Ghazal collection, Khaarey Paaniyon Ka Silsila-1985, honoured by Hindi Sahitya Samman, Prayag, Allahabad 2012, Shehanshah-e-Nizamat award by Bazm-e-adab, Roorkee, Uttarakhand and many more awards and honours by various prestigious organizations in the field of literature.

8. Shri Jalalpuri passed away on January 02, 2018.



श्री अनवार अहमद उर्फ अनवर जलालपुरी (मरणोपरांत)

श्री अनवार अहमद उर्फ अनवर जलालपुरी विभिन्न भाषाओं के एक सच्चे प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। आप व्यवसाय से अंग्रेजी के व्याख्याता, दिल से उर्दू के कवि तथा हिन्दी भाषा के पारखी थे।

2. आपका जन्म 06 जुलाई, 1947 को जलालपुर, जिला अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपको बचपन से ही पद्य एवं गद्य में गहरी रूचि थी, जिसने आपके अंदर साहित्य का भाव भर दिया। आपने अपनी परास्नातक की उपाधि, अंग्रेजी में, प्रतिष्ठित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से, उर्दू में परास्नातक की उपाधि अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से तथा अदीब कामिल का खिताब जामिया उर्दू, अलीगढ़ से हासिल किया था। आप एन.डी. कॉलेज जलालपुर, अम्बेडकर नगर में अंग्रेजी साहित्य के व्याख्याता थे। आपने जलालपुर में मिर्जा गालिब के नाम से एक कॉलेज की स्थापना की थी। लखनऊ को आपकी बुद्धिमता वाले मेजबान-शहर होने का सम्मान प्राप्त है। आप अपनी कृति 'निजामत'के लिए भी विश्व विख्यात हैं; जो उन लोगों को हमेशा पसंद आती है जो कविता से प्रेम करते हैं और उसकी सराहना करते हैं। आपने ऊर्दू साहित्य के महान विद्वानों में से एक के रूप में स्वयं को स्थापित करने में कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की थीं।

3. आप मिर्जा गालिब इंटर कॉलेज, जलालपुर, अम्बेडकर नगर के संस्थापक/अध्यक्ष तथा प्रबंधक थे। आप विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक मंडलों के सदस्य/सलाहकार थे तथा "बज्म-ए-दानिशजलालपुर" नामक अदबी तंजीम के संस्थापक थे। आप हेल्प यू एड्यूकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट, लखनऊ के संरक्षक भी थे।

4. आपने भागवद गीता के सभी 700 श्लोकों का उर्दू काव्य में अनुवाद किया। सांप्रदायिक एवं मानवजातीय सौहार्द्र तथा राष्ट्रीय एकीकरण के प्रति आपके सुझाव एवं प्रेरणा को देखते हुए यह पहल वास्तव में उत्कृष्ट है। आपका यह मत रहा है कि "गीता, उपनिषद और कुरान 'मानव विरासत' से किसी भी प्रकार से कमतर नहीं है तथा इन्हें हर कीमत पर संरक्षित किया जाना चाहिए तथा धर्म का लिहाज़ किए बिना गीता में अंतनिर्हित संदेश को समस्त मानवजाति के बीच प्रसारित करने की महती आवश्यकता है।"

5. आपको कुरान के 30वें पारा के साथ-साथ टैगोर की गीतांजलि का उर्दू काव्य में रूपांतरित करने का भी श्रेय जाता है, इसके साथ ही आपने प्रसिद्ध पारसी कवि उमर खैय्याम की रूबाइयों को उर्दू काव्य में अनुवाद किया।

6. आपने अपने जीवन के अंतिम 40 वर्षों के दौरान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुशायरों और कवि सम्मेलनों में हिस्सा लिया तथा इनका संचालन किया। आप उर्दू तथा देवनागरी लिपि में लगभग 24 पुस्तकों के लेखक एवं रचनाकार रहे। उर्दू शायरी में गीता, रोशनी के सफीर, खारे पानियों का सिलसिला, खुशबू की रिश्तेदारी, जागती आंखें आपके उर्दू-हिन्दी काव्य के कुछ संग्रह हैं। आपको 'नेतिया शायरी' पर चार पुस्तकों के लेखन का भी श्रेय जाता है। 'अपनी धरती अपने लोग' गद्य में आपके सृजन कार्य का संकलन है। कई जीवनियों के लेखन का श्रेय भी आपकी विद्वता को जाता है। कई अग्रणी समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में आप नियमित रूप से लिखते रहते थे। टेलीविजन पर 'अकबर द ग्रेट' सीरियल के संवाद और गीतों की रचना आपने की थी। उत्तर प्रदेश मदरसा एडयूकेशन बोर्ड के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश हज कमेटी, उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी, ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिस्ती उर्दू-अरबी-पारसी विश्वविद्यालय कार्यकारी समिति के सदस्य होने के अलावा आपको 'डेढ़ इश्किया' फिल्म में भी देखा जा सकता है।

7. आपको कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया जिनमें उत्तर प्रदेश का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार यश भारती 2015-16, उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान 2012, फिराक सम्मान2012, माटी रत्न सम्मान, उत्तर प्रदेश 2011, शामिल हैं। आपको गजल संग्रह खारे पानियों का सिलसिला - 1985 के लिए उत्तर प्रदेश राज्य उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया, साथ ही, हिन्दी साहित्य सम्मान प्रयाग, इलाहाबाद- 2012, बज्म-ए-अदब, रूड़की, उत्तराखंड द्वारा शहंशाह-ए-निजामत पुरस्कार और साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न प्रतिष्ठित संगठनों द्वारा कई पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ा गया।

8. 02 जनवरी 2018 को आपका देहावसान हो गया ।